अमृत लाल मदान

हम लहरें हैं गंगा जल की

हम लहरें हैं गंगा जल की

न लहरें उच्छल सागर की
न लहरें तपते मरूथल की
हिम-गृह में जन्मी गौरव से
हम लहरें हैं गंगा जल की।
निकली तो थीं पुण्य कमाने
तन-मन में इक दिव्य जगाने
हिम की शुचिता श्रम की महत्ता
भागीरथ की हम संतानें
लेकिन काला जल कुछ ऐसा
आकर मिला मलिन कूड़े सा
भूल गयीं हम निज घर को
जटा शंकर के घन जूड़े सा
कहां वो उच्च शिखर उद्गम का
बन कर रह गयीं वाहक मल की
हम लहरें हैं गंगा जल की।
क्यों दूषित हो सत्व हमारा
क्यों करें हम सच से किनारा
क्यों न बहे स्वच्छ व निर्मल
रजत स्वर्ण सी पावन धारा
क्यों फैलाएं कचरा-वचरा
धंधे, उद्यम, सैर सपाटे
देवों ऋषियों की थाती पर
पर्यावरण को क्यों हों घाटे
हम यमुना, गुप्त सरस्वती भी
हम शोभा हैं संगम स्थल की
हम लहरें हैं गंगा जल की।

जल संरक्षण पर दोहे

बूंद-बूंद से घट भरे, रिस-रिस रिसता जाय।
खाली हो न घट कोई, पी-पी प्यास अघाय।।
देखो सूखे खेत को पपड़ायी है गात।
तरस रहा इक बूंद को, कब होगी बरसात।।

जल ही सत्त है प्राण का, जल ही वेद पुराण।
जल बिन सूखी वन्दना, पूजा घर सुनसान।।
चलो बचाएं जल सदा, जल ही देगा त्राण।
जलवायु संरक्षण बने, नवयुग धर्म महान।।

जन-जन में जल चेतना कौंधे बारम्बार।
हो पाएगा फिर तभी जल रक्षण विस्तार।।
ताल नदी झरने रहें, पानी से भरपूर।
सूखे की आफत रहे, भू से कोसों दूर।।

जल भन्डारण सीख लें, भगवान दो वरदान।
निस दिन व्यर्थ गंवा रहा, नीर मूर्ख इंसान।।
पल-पल नत हो हम करें कुदरत का आभार।
जिसने जल देकर दिया जीवन को आधार।।

गर्मी आग उगल-उगल कर रही परेशान।
आंख टिकी आकाश पर, कब बरसेगा राम।।
कस-कर रखें टोंटियां, बूंद-बूंद अनमोल।
उनकी भी सोंचें जरा जो जल लाते तोल।।

मीलों चल कर इक घड़ा, पानी लाते ढोय।
कारों कुत्तों को हम इधर रगड़-रगड़ क्यों धोंय।।

पेड़

कब बनती है छाया तरू की
हार-सिंगार इक तपते मरू की
जब पत्ती-पत्ती जले बिचारी
दिन भर कड़ी धूप की मारी
राही को तो सुख मिलता है
न हो विटप तो दुःख मिलता है
पेड़ लगाएं सुख पहुंचाएं
धरती का श्रृंगार सजाएं
हे स्रष्टा, अगले जन्म में
मुझे मनुष्य नहीं पेड़ बनाना
किसी थकी मांदी पगडंडी
के किनारे ही उगाना
मनुष्य का साया
न अपना न पराया
आखिर किसके काम आया
पर्यावरण भी बाज आया।

संपर्क करें:
अमृतलाल मदान
1150/11, प्रोफेसर कालोनी, कैथल (हरि.)
मो.नं. 09466239164, 01746-224588